## पद १९६

(राग: काफी - ताल: दीपचंदी)

कां गे हरी कोठें गुंतला। सखे कां न ये घरा।।ध्रु.।। कोठें गुंतलासे न कळेचि कांहीं। कोण्या सवतीनें मोहिले मुरलीधरा।।१।। जाय सखे तूं बाही हरीला। करूं नको विलंब। जा कीं गे त्वरा।।२।। माणिक म्हणतसे धन्य ती राधिका। क्षणभरी नच विसरे इंदिरावरा।।३।।